

\* युवा (यंग) बंगाल आन्दोलन \*

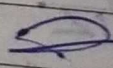
युवा बंगाल आन्दोलन कट्टरपंथी बंगाली  
 स्वतंत्र विचारकों का एक समूह  
 था हिन्दू कॉलेज के तैजतरा अध्यापक  
 हरी प्रसाद द्विवेदी के नाम पर  
 जो डी.एन. के नाम से जाना जाते  
 थे वे युवा बंगाली हिन्दू समाज के  
 स्वतंत्र विचारों की भावना व मौजूदगी  
 सामाजिक और धार्मिक संरचना के  
 खिलाफ विद्रोह से प्रभावित व असाहित  
 थे। युवा सदी के प्रारम्भ  
 में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति,  
 पश्चात्त्य सभ्यता एवं संस्कृति  
 के संज्ञान (आकाश) था। उस  
 समय शिक्षित भारतीय अंग्रेजी भाषा,  
 पाश्चात्त्य विज्ञान व पश्चात्त्य ज्ञान  
 को श्रेष्ठ मानते थे। अतः  
 परिणामस्वरूप भारतीय सभ्यता एवं  
 संस्कृति पर प्रश्नचिह्न लगा गया था।  
 1813 ई. के पश्चात् ईसाई पादरियों  
 का भारत में प्रचारण पर आग्रह  
 हुआ। वनईसाई धर्म प्रचारकों ने  
 सामाजिक कुरीतियों को अफाकल  
 हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही  
 धर्मों पर प्रहार करना प्रारम्भ किया  
 जिसके परिणामस्वरूप असरयुक्त हिन्दूओं  
 ने वनईसाई धर्म स्वीकार किया। धर्मतरण  
 के इस प्रवृत्ति पर रोक लगाने  
 के लिए अनेक हिन्दू व  
 मुसलमान अग्रज हुए।

SEPTEMBER

M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29	30						



इनके प्रयासों में अनेक धार्मिक एवं सामाजिक आंदोलन हुए। बंगाल के युवा वर्ग में 19वीं शताब्दी में नवीन वर्ग का अभ्युदय हुआ। इसी आवादी प्रवृत्ति ने बंगाल आन्दोलन का मार्ग प्रशस्त किया। इसका नेतृत्व एम. कृष्णचन्द्र इंडियन डेनरी, विलियम डीरोजिया ने किया। ये पेशे से अध्यापक थे, उस समय डीरोजियन प्रेस समाज के आन्दोलन से आकर्षित थे। यंग बंगाल आन्दोलन स्वतः देशी एवं वैदिक आन्दोलन था। इसका प्रमुख केंद्र कॉलेज था। यंग बंगाल आन्दोलन में ईलार शामिल थे। जैसे- हेलमजंडल डम्फ फिलोसोफी अनडल एल वली निमाल किया। उनके संस्था को लाल विहारी डे उनके विद्या था। शामिल हुए जो प्रजेन्द्रनाथ सीध धर्मशास्त्रों व जो बाद में प्रमुख विचारक बनने प्रेस समाज के चले गए।





देवबन्दी आन्दोलन का नाम उत्तर-प्रदेश के शहर ( देवबन्द ) के नाम पर पड़ा। 1886 में दिल्ली के उत्तर के सहरनपुर शहर में प्रमुख विद्वानों द्वारा एक इस्लामी सेमिनार देवबन्द स्थापित किया गया। इस संस्था के संस्थापक मुहम्मद कासिम थे।

एक मुसलमान अल्मा ( धर्मगुरु ) जो पुराने विद्या के अग्रणी थे जिन्होंने देवबन्द आन्दोलन चलाया था। इसके दो प्रमुख उद्देश्य थे।

1) मुसलमानों में कुरान तथा हदीसा की शुद्ध शिक्षा का प्रसार करना।

2) विदेशी शासकों के विरुद्ध जिहाद की भावना को बजाए रखना।

1885 में देवबन्द आन्दोलन ने सन् कांग्रेस का स्थापित भारतीय राष्ट्रीय इण्डिया का स्वागत किया। इन्होंने अंग्रेजों के विरोध और उपनिवेशवाद के प्रतिरोध के लिए एवं अंग्रेजों द्वारा कर्षकों का विरोध एवं इस्लाम के संरक्षण हेतु उर्लेमा देवबन्द देवबन्द पर एतत हुए एवं एका सुरक्षित ठिकाना बनाया।

SEPTEMBER														
M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	
9	10	11	12	13	14	15	1	2	3	4	5	6	7	8
23	24	25	26	27	28	29	30							